— मूल बौद्ध साहित्य को कहते क्या है।
इसे कहते हैं - पिटक साहित्य
पाली एक प्रकार से पट ज्ञान की पिटारी है।
जब - जब खोले गे, ज्ञान ही मिलेगा।
So, यह ज्ञान की पिटारी है।

— पिटक साहित्य किसकी देन - बुद्ध
— पिटक साहित्य भाषा क्या - पालि
— रचना काल क्या - (6-5) Century B.C
— विषय क्या - विशुद्ध धार्मिक
— स्वरूप क्या - मौखिक
— सुरक्षित कैसे - संगीतियों के जरिये।

बौद्ध धर्म के भी चार संगीति हुए हैं

— पिटक साहित्य कितने है - 3

1. विनय पिटक
2. अभि धम्म पिटक
3. सुत्त पिटक

पहला, दूसरा, तीसरा यह नही है कोई क्रम नही
इसलिए पिटक को कहते है - त्रिपिटक।

विनय पिटक
यह भी त्रिपिटक मे एक है
— मूल बौद्ध साहित्य है
— पालि साहित्य है
— यह भी बुद्ध वचन है
— बुद्ध की देन है
— इसके संकलनकर्ता उपालि है जो बुद्ध के शिष्य थे
प्रथम बौद्ध संगीति जो राजगृह में बुलायी गई थी। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 3 महीने बाद 483 B.C मे, उसी अवसर पर विनय पिटक को संकलित किया गया।

विनयपिटक उत्पत्ति को।

— विनयपिटक में है क्या - बुद्ध द्वारा दिये गए नियम हैं।

यह Rule Book है
जैसे जैन साहित्य में अंग है, वैसे ही बौद्ध साहित्य में विनयपिटक है।
बौद्ध धर्म के शामिल लोग जो सक्रिय रहते हैं जिन्हें बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणी कहा जाता है या जिन्हें बौद्ध श्रमण या श्रमणी कहा जाता है वे आखिर संघ में रहते हुए कैसे काम करेंगे। उनके लिए क्या Rule regulation है यह सब विनयपिटक में बताया गया है।
इसलिए विनयपिटक का मतलब है
वह पिटारी जिसमें नियम, अनुशासन की चर्चा है
क्या करना है, क्या
— क्या नहीं करना है यह भी बताया गया है।

बौद्ध धर्म के तीन ही रत्न है
1. स्वयं बुद्ध यानि बौद्ध धर्म के प्रणेता
2. संघ यानि organisation (संगठन)
3. धम्म यानि सिद्धांत, विचार

बुद्ध को जानना है तो सुत्त पिटक है
संघ को जानना है तो विनय पिटक है
धर्म को जानना है तो अभिधम्म पिटक है।
इसलिए विनयपिटक का मतलब
है - Rule, Rule, Rule, only Rule
अनुशासन, अनुशासन, केवल अनुशासन
आचरण, आचरण, आचरण
(Conduct, conduct — —)
संघ, संघ, संघ जीवन

क्या करना है, क्या नहीं करना है। दोनों की चर्चा

— विनय पिटक के भाग भी है — yes

विनयपिटक (नियम पुस्तक, संघ जीवन अनुशासन आचरण से संबंधित

- सुत्तविभंग
  - भिक्षु विभंग
  - भिक्षुणी विभंग
- खंदक
  - चूल्लवग्ग
  - महावग्ग
- परिवार पाठ

सुत्तविभंग — नियम ही है, इसमें नियम निषेधात्मक है यानि इसमें बताया गया है कि एक भिक्षु-भिक्षुणी को क्या-क्या नहीं करना चाहिए इसी में पातिमोक्ख

— पातिमोक्ख भी है यानि 228 नियम, जो इसके अनुसार करना जो यह नियम भिक्षु-भिक्षुणी को रोककर रखना था कुछ इसकी उल्लंघन करते लिए करते हैं। इसलिए पातिमोक्ख ही असली नियम है यही शील है, विनय है, यही आचरण है यही मोक्ष है, यही लक्ष्य है। इसलिए सबकुछ पातिमोक्ख ही हो गया निकलो रहते हैं 228 ही

खन्दक हिस्सा (चूल्लवग्ग) —— इसमें भी नियम ही है इसमें निर्देशात्मक नियम है

— निषेधात्मक नहीं। यानि कुछ बताते हैं एक भिक्षु भिक्षुणी को क्या-क्या करना है बताने के story भी बताते हैं नियम का उदाहरण भी इसमें से समझाया गया है इसलिए इन नियमों को भी आती महत्व है Positive rule

Scanned with CamScanner

3. परिवार पाठ

यह इस बुक का Index है (अनुक्रमणिका) इसमें बताया गया है कि, गुरु ने कौन से नियम कहाँ दिये। गुरु तो इधर उधर जगह पर घूमते रहे, प्रवचन देते रहे। इस किताब में बताया गया कि कौन सा नियम कहाँ लिखकर बताया गया है। इसलिए यह rule Books का Index है